अध्याय द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय–द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

मानव को सतत प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान अनुसंधान में मिलता है अनुसंधान द्वारा प्रस्तावित अध्ययन में प्रत्येक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर पहले किए गए कार्य से बिना जोडे स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। अनुसंधान की योजना में संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हे।

2.2 संबंधित साहित्य के अध्ययन का महत्व–

वस्तुतः संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधार्थी अंधे के तीर के समान होता है। इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ सकता, जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य किया गया है। तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है। तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है।

अतः इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए निम्न परीभाषा दी है।

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि, वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आवश्यकता खोजों से परिभाषित होता है, उसी प्रकार शिक्षा में जिज्ञासु छात्र/छात्राएँ अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधान के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।" 'गुड बार एवं स्केट्स'

2.3 संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के कार्यः–

- अनुसंधान के लिए यह आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।
- इसके द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि, इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है? क्या, कब कहाँ किसने और कैसे अनुसंधान कार्य किया है? इसकी जानकारी देता है।
- संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण अनुसंधान के लिए अपनाई जाने वाली विधि प्रयोग में लाये जाने वाले उपकरण तथा आकडों के विश्लेषण के लिए प्रयोग में आने वाली उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
- इसका महत्वपूर्ण कार्य समस्या को परिभाषित कर अवधारणा बनाने समस्या के सीमांकन और परिकल्पना एवं उद्देश्य निर्माण में सहायता करना है।

2.4 संबंधित शोध कार्यों का पुनरावलोकन

पाटील 1988

इन्होंने "राष्ट्रीय शिक्षा नीति हेतु बृद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम का महाराष्ट्र राज्य के धुले जिले के प्राथमिक व माध्यमिक शाला के अध्यापकों का अध्ययन" शीर्षक के अंतर्गत लघु शोध किया।

उददेश्य

(1) राष्ट्रीय एकता लाने में अध्यापकों द्वारा वर्तमान पाठ्यक्रम के उपयोग का अध्ययन (2) अध्यापकों द्वारा बालकों में राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास की विधियों का अध्ययन (3) बालके अधिगम की गतिविधियों में अध्यापक की भूमिका का अध्ययन था।

निष्कर्ष–

1. राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करने के लिए सामाजिक समानता होना जरूरी है।
2. छात्रों का मूल्यमापन का सर्वोत्तम प्रकार मानसिक मूल्यमापन है।
3. मूल्यमापन में वस्तुनिष्ठ पर अधिक महत्व दिया गया है।

4. प्रशिक्षण की अवधि कम थी।

5. छात्रों में सृजनात्मकता का विकास क्रियाओं को आयोजित करके किया जाता है।

6. अध्यापक प्रशिक्षण निरंतर होते है रहने चाहिये।

अवस्थी और सुनिता 1989

इन्होंने "सीखने की पहली पीढ़ी और अन्य के बीच स्वयं मूल्यमापन और विकास कौशल का एक तुलनात्मक अध्ययन" नामक शीर्षक पर अध्ययन किया। यह अध्ययन कक्षा आठवी और नौवी के छात्राओं के बीच स्वयं मूल्यमापन और कौशल्य विकास का परीक्षण मापन करने हेतु किया गया।

उद्देश्य–

1. सिखने की पहली पीढ़ी में स्वयं मूल्यमापन और दूसरों के कौशल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. लड़के और लड़कियों के बीच स्वयं मूल्यमापन एवं कौशल विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

1. पहली पीढ़ी स्वयं मूल्यमापन और कौशल्य विकास की परीक्षा में अंक के संबंध में दूसरों के साथ तुलना में कम अंक प्राप्त हुये है।
2. यहां लडको एवं लडकियों के बीच स्वयं मूल्यमापन और कौशल्य विकास के बीच में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

CHOUDHARI, V.M. 1990

Choudhari, V.M. 1990, A comparative study of malpractices in exumination during 1984-88 in the Nagpur University M. Phil study of Education poblem of the study .

In attempt to search for certain measures to control the Malpractices in the examinations which not only affects the results of intelligent students

but also proves to be both erations to the university administration there measures would not only be helpful in reducing the number of malpractices but also help in bringing changes in the examination system.

OBJECTIVES –

1. To study the extent of malpractices in each faculty in every year in different subjects.
2. Punishment given by the university as a remedial measure against malpractices.

FINDING –

The maximum number of cases occurred on the date and day of the examinations, student were found to be debarred from the exams for one or two successive years as punishment by the university.

JYOTI, NIRMALA M. 1992

The study was designed to evaluate the non- detention system on different aspects like its effects on achievement of students, percentage attitude of teachers, student and administrators.

OBJECTIVES

1. To make a comparative study of
   (a) The achievement of student
   (b) Percentage of passes and
   (c) Rate of drop-out in the detention and non detention system.

FINDINGS

1. There was no significant difference between urban and semi urban children.
2. The student had a significantly negative attitude towards the new system and mean attitude scores of students was significantly higher then that of teacher.

भट्टाचार्य अर्चना और निर्मला शर्मा 1998

इन्होंने "प्राथमिक शालये स्तर पर बच्चों के सर्वागीन विकास हेतु शैक्षिक एवं सह शैक्षिक क्रियाओं को समान महत्व" विषय नामक शीर्षक पर अध्ययन किया यह अध्ययन असम के जोरहाट जिले के प्राथमिक स्कूलों के तीन शिक्षा खंडों में 50 प्राथमिक विद्यालयों पर किया गया।

उद्देश्य–

1. प्राथमिक विद्यालय द्वारा चलाये जा रहे पाठ्यक्रम के क्षेत्र में यह शैक्षिक मूल्यमापन को जाचँना।
2. असम के जोरहाट जिले के प्राथमिक विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यमापन के स्थिति का अध्ययन करना।
3. अध्यापकों की CCE के प्रति जागरूकता को जानना।

निष्कर्षः–

1. विद्यालय में सह शैक्षिक क्रिया को करने हेतु कोई व्यवस्था (जगह) नहीं है।
2. यहा शैक्षिक गतिविधियों में कौशल्य उपयोगिता का निर्धारण करने हेतु मूल्यमापन प्रक्रिया का कोई प्रारूप नहीं है। CCE के अनुसार स्कूली दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।
3. अध्यापकों की अनुउपस्थिति पायी गई।
4. केवल सैद्धांतिक रूप में अध्यापकों को इसके बारे में पता है।
5. यह निगरानी हेतु परिवेक्षण प्रतिक्रिया के लिए राज्य प्राथमिक अधिकारी से कोई दिशानिर्देश नहीं दिये जाते।
6. इस व्यक्ति का प्रमुख कारण यह है कि औपचारिक प्रशिक्षण संबंध में स्कूल के पाठ्यक्रय के एक भाग के रूप में इन गतिविधियों को शामिल किया गया है।
7. शैक्षिक गतिविधियों के महत्व के अलावा सह शैक्षिक गतिविधियों को महत्व दिया जाना चाहिये।

राव मंगुला पी. 2001

इन्होनें "प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों पर सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यमापन प्रयोग पर प्रभाव" नामक शीर्षक पर अध्ययन किया।

उद्देश्य -

1. सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण पहले अध्यापकों का मूल्यमापन अनुप्रयोग का अध्ययन करना।
2. सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण पश्चात अध्यापकों का मूल्यमापन प्रयोग में प्रश्नोत्तरी कौशल्य परीक्षण और रिपोर्टिंग कार्यपद्धति का अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

1. सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण पहले शिक्षण पुराने ढंग से रटने रटाने पद्धती पर अधिक बल देते थे। परीक्षा तक मूल्यमापन को मर्यादित करते थे।
2. सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण पश्चात् मूल्यमापन कौशल्य में सुधार हुआ इससे छात्रों की उपलब्धि बढने में मदद मिली है।
3. सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण पश्चात अध्यापकों के प्रश्नोतरी कौशल्य का विकास हुआ वे रचनात्मक पद्धति से मूल्यमापन करते है। मूल्यमापन में परीक्षण, मौखिक, लिखित दोनो का समावेश किया जाता है साथ ही रेकार्ड और रिपोटिंग समय पर पूर्ण करने से छात्रों के सर्वागिन गुणों का विकास करने में इसकी सहायता मिल गई है। छात्रों की उपलब्धि बनाने में मदद मिल रही है।

LAXMINARAYANA U. RIE, BHOPAL 2005

Conducted study on Continuous Assessment scheme to develop personal and social qualities.

This study on emphasis the progress of the learner will be evaluated quite often in continuous evaluation in order to acquaint the teacher with the scheme, orientations, programme were organized.

The major finding of this study it is found that there is improvement in qualities like regular habits, cleanliness, protecting Envirnment, physical emotional development, self expression protection of public property and appreciation, of cultural heritage.

Positions paper, NCF

- Positions paper, NCF 2005, Examination reforms :

Continuous and comprehensive Evaluation (CCE) : The group felt strongly that a school based continuous and comrpehensive evaluation system to be established in order to :

(1) Reduce stress on children, (2) make evaluation comprehensive and regular. CCE need for introducing CCE, in schools in an effective and systematic manner has been felt for a long time as the examination, conducted, by the boards of school education. The govt. has taken initiatives for the periodic assessment in scholastic area and co-scholastic area. CCE refers to a system of school based evaluation of student that cover all aspects of student.

श्रीमती लाठर निर्मल 2006

इन्होने "प्राथमिक कक्षाओं के उपलब्धि स्तर पर सतत मूल्यमापन के प्रभाव का अध्ययन" इस विषय के अंतर्गत शैक्षिक मूल्यमापन एवं अनुसंधान विभाग द्वारा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हरियाणा (मानेसर) गुडगाँव के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु अध्ययन किया। यह अध्ययन जिला गुडगॉव के मानेसर ब्लाक में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में 10 प्राथमिक प्रायोगिक विद्यालय तथा 10 नियंत्रित समूह में विद्यालय को रखकर विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि का उपयोग किया गया।

उद्देश्य –

1. सतत मूल्यमापन द्वारा विद्यार्थी के उपलब्धि स्तर में वृद्धि का अध्ययन करना।
2. सतत मूल्यमापन के प्रति अध्यापकों में सकारात्मक प्रवृत्ति विकसित करना।

निष्कर्ष

1. इससे विद्यार्थियों में परीक्षा के प्रति पैदा होने वाले तनाव में पर्याप्त कमी हो सकती है। विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में लगातार वृद्धि की संभावना स्वतः बढ़ गई है।
2. सतत मूल्यमापन शिक्षण अधिगम में गुणवत्ता लाने में सहायक सिद्ध हो गया है।
3. इसे पाठ्य पुस्तकों के साथ योजनाबद्ध ढंग से प्रत्येक पाठ–इकाई से जोडा जा सकता है।
4. सत्र के अंत में समेकित परीक्षण लेने पर नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों का उपलब्धि स्तर प्रायोगिक समूह के विद्यालयों के उपलब्धि स्तर की तुलना में काफी निराशा जनक रहा।
5. सतत मूल्यांकन के प्रभाव से विद्यार्थी के उपलब्धि स्तर में निश्चित तौर से वृद्धि हुई है। प्रायोगिक समूह जहाँ। सतत मूल्यमापन प्रक्रिया को अपना गया तथा नियंत्रित समूह ने जहां इसे नहीं अपनाया में समैकित परीक्षण के दृष्टिकोण में काफी अंतर पाया गया।

भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. 2008

"परीक्षा संबंधी सनाव व चिंता में कमी" इस लेख के अंतर्गत आज विद्यार्थियों में बढ़ते हुए परीक्षा संबंधी तनाव व चिंता में कमी कैसे लाई जाय परीक्षा प्रबंध कैसा हो? परीक्षा संचालन के तरीके क्या होने चाहिए विद्यालय आधारित संकलन कैसा हो आदी पर दृष्टि डाली गई।

जिसमें पाया गया कि शिक्षकों को सेवा पूर्व एवं सेवा अंतर्गत सी.सी.ई. प्रशिक्षण की आवश्यकता है। मापन एवं मूल्य मापन के लिए एन.सी.आई.आर.टी. के तरफ से प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम शुरू किया जाने तथा पाठ्यचर्या को अधिक रूचिकर बनाने हेतु कहा गया। शिक्षा पर अधिक व्यय करने की जरूरत है साथ ही यह परीक्षा सुधार प्रणाली शिक्षा सुधार के तरफ ले जाने वाली है। अब समग्र रूप से भारतीय शिक्षा में सुधार आवश्यक हो गया है।

यहाँ परीक्षा तनाव में प्रश्नपत्रों की लम्बाई है। उसे छोटा करना चाहिये बहु विकल्पीय प्रश्नों का चयन करना, रटने की पद्धति को कम करना परीक्षा प्रबंधन में सुधार करना परीक्षा केन्द्र के चयन की सुविधा जैसे केरल ने की है साथ ही महाराष्ट्र में प्रश्न पत्र एनक्रिप्टेड बारकोड़ पद्धति का स्वीकार किया है। साथ ही शालेय गतिविधियों में सतत एवं व्यापक मूल्यमापन करने हेतु आवश्यकता स्पष्ट की है।

राष्ट्रीय सहारा 2009

वर्ष के अन्त में होने वाली परीक्षा के नतीजों के आधार पर किसी बच्चों के व्यक्तित्व का सही आकलन नहीं होता है रटन तरीके से परीक्षा पास कर ली जाती है। इससे न तो बच्चों की रचनात्मक क्षमता का पता चल पाता है न ही बच्चों के व्यवहार ज्ञान की सही परख हो पाती है। शिक्षा एक एकीकृत व संपूर्ण प्रक्रिया है। पढाई को केवल कक्षा व किताबों तक सीमित रखना तो शिक्षा के लक्ष्य व उद्देश्यों के खिलाफ है इसलिए बच्चों को स्कूल में बुनियादी ढाचा सुविधाएँ व लचीलेपन के साथ इनपुट इस तरह मिलने चाहिये कि उनसे बच्चों के अकादमिक व बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक व भावानात्मक विकास में मदद मिले। मूल्यांकन सीखने व पढने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है इससे सीखने वाले के विकास व उपलब्धि के बारे में जानकारी मिलती है। बालक को सीखने में कहाँ कठिनाई आ रही है और उसकी चिंताएँ बैचेनी क्या है इस तरह का फीडबैक किसी भी कार्यक्रम की योजना बनाने में व कोर्स के मध्य में सुधार व दखल के लिए बहुत जरूरी है। पाठन पठन मूल्यांकन के एक ही सिक्के दो पहलू है मूल्यांकन को

सीखने की सतत प्रक्रिया के साथ जोडा जाये ताकि बच्चों के मन में परीक्षा का भय व तनाव दूर हो जाये।

जनसत्ता 2009

बच्चों पर पढाई के बोझ और तनाव को कम करने और पढ़ाई को रचनात्मक और पेशेवर बनाने के लिए सी.बी.एस.सी. ने सी.सी.ई. योजना अमल करने के निर्देश दिये है। हम बच्चों में रटन ज्ञान को समाप्त करना चाहते है। जिससे उनका सामान्य और रचनात्मक ज्ञान सामने आ सके। रचनात्मक ज्ञान परखने हेतु फारमेटिव व व्यवहारिक ज्ञान परखने हेतु समेटिव मूल्यमापन पर जोर दिया जाये।

फारमेटिव ऐसा उपकरण टीचर के लिए होगा जो छात्रों के भय मुक्त तनाव रहित संयोगात्मक वातावरण में पढाई का पदर्शन बेहतर करने में मदद करेगा। यह पेन और पन्नो तक न रखकर क्वीज, परिचर्चा, साक्षात्मकार मौखिक पूछताछ दृश्य पर आधारित प्रश्न प्रोजेक्ट वर्क आदि माध्यम से जाँचा जायेगा।

व्यवहार ज्ञान समेटिव परीक्षा पाठ्यक्रम और विषयों के बारे में छात्रों के ज्ञान को जाँचने का माध्यम होगा इसका स्वरूप लिखित परीक्षा का होगा और आयोजन स्कूल करेगा।

मूल्यांकन में अन्य गतिविधि भी होगी जिसमें विषयों के साथ लाईफ स्कील चैकलिस्ट, इमोशनल स्किल, में पॉच पांईट रेटिंग के शिक्षक सहपाठी, स्कूल के कार्यक्रम, पर्यावरण के प्रति रूझान, रचनात्मक खेल, संगीत, कला सौन्दर्य बोध, शारीरिक शिक्षा, खेलकूद के आधार पर मूल्यांकन होगा। इसके लिए शिक्षको को स्पेशल ट्रेनिंग का आयोजन किया जायेगा।

ROUTE RANJAN KUMAR, GURU, NIBEDITA 2010

"The scenario of continuous and comprehensive Evaluation in 21st Century" October 2010, Education tracks.

In thisarticles he averring that we are unable to practice. Continuous is comprehensive. Evaluation in our classroom through it contributes a lot to the teaching learning process, the author state that we should try our best to implement continuous and comprehensive evaluation whole heartedly with missionary zeal.